Q1 चिन्तन में भाषा के महत्व की व्याख्या करें।

Ans- चिन्तन (thinking) में भाषा का महत्व क्या है यह एक विवादास्पद विषय है। इस संबंध में मनोवैज्ञानिकों के विचार भिन्न-२ है।

1. कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि चिंतन के लिए भाषा आवश्यक है। भाषा के अभाव में चिंतन की प्रक्रिया नही हो सकती है। अतः चिन्तन की प्रक्रिया भाषा द्वारा प्रभावित तथा निर्धारित होती है। इस तरह के विचार व्यक्त करनेवाले मनोवैज्ञानिकों में सापिर तथा उनके शिष्य ओर्फ (Whorf 1956) ब्रुनर (Bruner 1964) आदि का नाम अधिक प्रसिद्ध है।

सापिर (Sapir) की परिकल्पना यह थी कि भाषा (language) द्वारा चिंतन की प्रक्रिया काफी हद तक प्रभावित होती है। इस परिकल्पना का समर्थन ब्रुनर (Bruner 1964) के प्रयोगात्मक सबुतों द्वारा होता है। इन्होंने शिशुओं तथा प्राक्-स्कूली छात्रों (Pre-school children) पर प्रयोग किया और पाया कि इन बच्चों के चिन्तन की प्रक्रिया तथा संज्ञानात्मक विकास अधिक सीमित इसलिए होता है क्योंकि इनमें भाषा पूर्ण रूप से विकसित नही होती है। इनके अध्ययन के अनुसार 6-7 साल की उम्र मे बच्चों के सोचने के लिए अच्छी तरह से भाषा का उपयोग प्रारम्भ कर देते है। चुँकि प्राक्-स्कूली बच्चों की उम्र 6 साल से नीचे होती है और उनमें भाषा का विकास पूर्ण नही रहता अतः उनका संज्ञानात्मक विकास विशेषकर चिन्तन की प्रक्रिया से प्रभावित होती है। बर्नस्टीन (Bernstein 1958) ने गरीब तथा धनी परिवार के बच्चों के चिन्तन का एक तुलनात्मक अध्ययन किया है इनके अनुसार गरीब परिवार के बच्चों की भाषा सीमित एव अविकसित होती है तथा धनी परिवार के बच्चों का

संज्ञानात्मक विकास (cognitive Development) भी अधूरा एवं अपूर्ण होते पाया गया है। ऐसे बच्चों के चिन्तन एवं तर्क करने की क्षमता धनी परिवार के बच्चों की ऐसी क्षमता की अपेक्षा हमेशा कम होती पाई गई।

प्रीमैक (Preemack 1983) ने एक इस तरह का अध्ययन "साराह" (Shapes) नामक वनमानुष पर किया। इस वनमानुष को प्लास्टिक के बने भिन्न-भिन्न आकारें (Shapes) तथा रंगों के वस्तुओं के सहारे कई शब्दों (words) को सिखलाया गया। प्लास्टिक के बने प्रत्येक वस्तु का अर्थ एक खास शब्द (word) होता था। ढाई साल के इस तरह के प्रशिक्षण के बाद "साराह" ने 100 शब्दों को सीख लिया और इन शब्दों के सहारे वह अपनी आवश्यकताओं (needs) की भी अभिव्यक्ति करना सीख लिया। बाद में प्रीमैक ने "साराह" को अन्य वनमानुषों जिन्हें ऐसा प्रशिक्षण नहीं दिया गया था। इसके प्रयोगशाला में कई कठिन एवं जटिल समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए दिया। इन समस्याओं के समाधान में उच्च चिन्तन (high thinking) जरूरत थी। "साराह" ने अन्य वनमानुषों की अपेक्षा इन समस्याओं का समाधान जल्दी कर लिया। प्रीमैक के अनुसार ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि "साराह" को भाषा का प्रशिक्षण दिया गया था।

ओर्फ (whorf 1956) ने अपने गुरु सापिर (Sapir) के इस कथन को भाषा द्वारा चिन्तन प्रभावित (influenced) ही नहीं बल्कि निर्धारित (determined) भी होती है। सचमुच में ओर्फ के योगदान को मनोवैज्ञानिकों द्वारा अधिक मान्यता मिली है। ओर्फ (whorf) की परिकल्पना (hypothesis) यह थी कि भाषा का विकास चिन्तन की प्रक्रिया से पहले होता है। तथा चिन्तन की प्रक्रिया का

Scanned by TapScanner

निर्धारण पूर्णरूपेण भाषा (language) द्वारा ही होता है। इसे भाषाई नियतिवाद कहा गया तथा साधारण रूप से ओर्फ ~~परिकल्पना~~ परिकल्पना (whorf hypothesis) के नाम से मशहूर हुआ इस परिकल्पना के अनुसार सभी उच्च-स्तरीय चिन्तन भाषा द्वारा ही निर्धारण होता है.

ओर्फ परिकल्पना (whorf hypothesis) का समर्थन ऐसे अध्ययनों पर किया जाता है जिसमें कुछ ऐसी जनजातियों (tribes) पर किया गया है। जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकारों रंगों के लिए अलग से कोई नाम नहीं होता है. दानी (Dani) न्यू गिनिया (New Guinea) की एक ऐसी जाति है। जिसमें भिन्न-भिन्न से रंगों का ज्ञान करने के लिए मात्र दो शब्द है मिली (mili) जिसका अर्थ काला (अंधकार से होता है तथा मोला (mola) जिसका अर्थ उजाला से होता है. भाषा बोलने वाले कुछ व्यक्तियों को भिन्न-2 प्रकारें के रंगों के अन्तर का प्रत्यक्षण तथा उसके बारे में सोच-कर कुछ बताने के लिए कहा तो दानी जनजाति के व्यक्तियों में ऐसा उसके बारे में सोचकर कुछ बताने के लिए कहा तो दानी जनजाति के व्यक्तियों में ऐसा करने की असमर्थता पाई गई जबकि अंग्रेजी भाषा बोलने वाले व्यक्तियों ~~के~~ में करने में समर्थ रहे। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि दानी के भाषा में भिन्न-भिन्न रंगों के लिए मात्र दो ही शब्द थे जबकि अंग्रेजी भाषा में भिन्न-भिन्न रंगों के लिए मात्र दो ही शब्द थे जबकि भाषा में भिन्न-2 रंगो के लिए ग्यारह अलग-अलग शब्द है।

ओर्फ परिकल्पना (whorf hypothe एक काफी महत्वपूर्ण परिकल्पना है फिर भी मनोवैज्ञानिक ने इसकी आलोचना अनेको है।

(i) वोर्फ परिकल्पना (Whorf hypothesis) के अनुसार भाषा में विभिन्नता (Differences) से चिन्तन क्षमता में भी विभिन्नता आती है। डेल (Dale 1976) ने इस परिकल्पना की आलोचना करते हुए कहा है कि भाषा में विभिन्नता से यह तो स्पष्ट रूप से पता चलता है कि भाषाएँ एक-दूसरों से भिन्न होती हैं लेकिन इसके आधार पर बिना किसी स्वतंत्र माप (independent measure) ने यह कहा है कि इसके कारण चिन्तन क्षमता में भी अन्तर होता है।

(ii) वोर्फ परिकल्पना (Whorf hypothesis) की इस आधार पर भी ~~कोई~~ ~~…~~ की गई है कि भिन्न-2 भाषाओं से विभिन्नता के बावजूद काफी अधिक समानता होती है। जैसे प्रत्येक भाषा में संज्ञा (noun) तथा क्रिया (verbs) होती है और प्रत्येक भाषा में कुछ नियम हैं जिनके शब्दों के क्रम का निर्धारण होता है। इतना ही नहीं, भाषा की किसी विशेष संरचना जैसे-शब्द मिलाकर बोलना, पूरा-पूरा शुद्ध वाक्य बोलना आदि प्रत्येक भाषा बोलने वाले बच्चों में करीब-करीब एक ही समय में विकसित होती है।

2. मनोवैज्ञानिकों का एक-दूसरा समूह ऐसा भी है जिसने विचार के ठीक विपरीत विचार व्यक्त किया है। इसमें पियाजे (Piaget 1923) तथा क्लार्क (Clark 1973) का नाम अधिक प्रसिद्ध है चिन्तन की प्रक्रिया व्यक्ति में पहले होती है और बाद में उससे संबंधित शब्दों का विकास होता है दूसरे और शब्दों में चिन्तन की प्रक्रिया के लिए भाषा आवश्यक नहीं है क्योंकि चिन्तन पहले होता है। भाषा का प्रयोग बाद में। इस तरह से चिन्तन की प्रक्रिया भाषा द्वारा प्रतिबिम्बित होती है। न कि निर्धारित होती है।

कुछ मनोवैज्ञानिक ऐसे भी हैं जो इन दो विपरीत विचारों के केन्द्र में अपना विचार दिया है कि भाषा तथा चिन्तन दो ऐसी प्रक्रियाएँ है जो प्रारम्भ में अलग-अलग तथा स्वतंत्र रूप से विकसित होती हैं किसी का विकास दूसरे द्वारा प्रभावित नहीं होता हैं। इसके अनुसार दो साल तक की अवस्थाओं में चिन्तन तथा भाषा का विकास बिना एक दूसरे को प्रभावित किए हुए होता हैं लेकिन उसके बाद चिन्तन की अभिव्यक्ति शब्द में होने लगती हैं तथा बच्चे शब्दों का प्रयोग भी विवेकी ढंग से करने लगता है।

Dr. Randhir Kumar
Dept of Psychology
Subject - (Hon & Sub) A - fundamental Psy
U.R.C. Rosera Samastipur
9570435959, 9431852588

Scanned by TapScanner